वैश्विक : हिन्दी भाषा व मीडिया

अनिल
शोधार्थी, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

शोध आलेख सार

भाषा किसी भी व्यक्ति-विशेष, समुदाय विशेष की उस अमूल्य निधि का नाम है जिसके द्वारा वह अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। जिसके विषय में कभी अल्लामा इकबाल ने कहा था- ''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'' और छायावादी कवि, नाटककार जयशंकर प्रसाद ने कहा था - ''अरुण यह मधुमय देश हमारा/जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा। '' यहाँ विभिन्न धर्म और जाति के लोग निवास करते हैं। हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न समुदायों में भाषा के अनेक रूप-रंग और स्तर पाएं जाते हैं। गांव हो या शहर लोग अपनी-अपनी बोलियों में जिंदगी जीते हैं, सपने देखते हैं, रोते हैं, खुश होते हैं और गाते हैं। हिंदी के संदर्भ में मीडिया शब्द की अवधारणा कोई ज्यादा पुरानी नहीं है, किन्तु अंग्रेजी में मीडिया शब्द का इतिहास लगभग 93-94 वर्ष का है। अपने प्रारम्भिक दौर में हिंदी में मीडिया शब्द रेडियो और टी.वी. जैसे इलैक्ट्रानिक माध्यमों के साथ शुरू हुआ था और फिर मीडिया के लिए न्यू मीडिया, नाउ मीडिया, वेब मीडिया, साइबर मीडिया तथा डिजिटल मीडिया जैसे शब्दों का प्रचलन समय के साथ-साथ होता चला गया। हममें से बहुत सारे लोग ऐसे होंगे जो सुबह उठते ही सूर्य नमस्कार की जगह सोशल मीडिया को नमस्कार करते होंगे अर्थात् सुबह सोकर उठते ही ऑनलाइन हो जाते होंगे।

बीज शब्द: वैश्विक, प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया, हिन्दी पोर्टल।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त एवं सर्वोत्तम माध्यम है। मानव जीवन में भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा किसी भी व्यक्ति विशेष, समुदाय विशेष की उस अमूल्य निधि का नाम है। जिसके द्वारा वह अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। भाषा में इतनी शक्ति होती है कि वह एक समाज-विशेष के निर्माण में अहम भूमिका अदा करती है। जहाँ एक ओर महर्षि पतंजलि भाषा को ''व्यक्ता वाचि वर्णा येषां त इमे व्यक्त्वाचं'' कहकर संबोधित करते हैं तो वहीं दूसरी और मध्यकालीन कवि, संत, समाज-सुधारक कबीरदास भाषा को बहता नीर कहते हैं - संसकिरत है कूप जल, भाखा बहता नीर।'' बहरहाल।

हिंदी हिंदुस्तान की राजभाषा है जो हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक है। 'महात्मा गांधी' ने सन् 1916 ई. में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में हिन्दी में भाषण दिया और कहा - हिंदी का प्रश्न मेरे लिए स्वराज्य के प्रश्न से कम नहीं है। सन् 2011 ई. की जनगणना के अनुसार हिन्दुस्तान की जनसंख्या 121 करोड़ है। जिसमें आधे लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। यूनेस्को के अनुसार विश्व के लगभग 137 देशों में हिंदी भाषा किसी न किसी रूप में जीवित तरीके से मौजूद है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के द्वारा 30 देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षक का पद सृजित किया गया है। इस प्रकार समूचे विश्व में हिन्दी बोलने, समझने वालों की संख्या एक सौ दस करोड़ से अधिक है। हिंदी के संदर्भ में मीडिया शब्द की अवधारणा कोई ज्यादा पुरानी नहीं है, अपने प्रारम्भिक दौर में हिंदी में मीडिया शब्द रेडियो और टी.वी. जैसे इलैक्ट्रानिक माध्यमों के साथ शुरू हुआ था और फिर मीडिया के लिए न्यू मीडिया, नाउ मीडिया, वेब मीडिया, साइबर मीडिया तथा डिजिटल मीडिया जैसे शब्दों का प्रचलन समय के साथ-साथ होता चला गया।

एक बात स्पष्ट कर दूं कि ऐसा कहकर मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हमें इन सबका प्रयोग नहीं करना चाहिए या सुबह ही ऑनलाइन नहीं हो जाना चाहिए। मेरा ऐसा कहने से तात्पर्य यह है कि गौर किया जाना चाहिए की सोशल मीडिया पर हम हिंदी भाषा के नाम पर देवनागरी लिपि की उपेक्षा करके (जिसको लेकर हिन्दुस्तान में एक लंबा आंदोलन चला) युनिकोड की सुविधा होने के बावजूद रोमन लिपि में जिस भाषा को लिखते हैं उसका रूप-स्वरूप क्या है? यदि कहा जाए

कि सोशल मीडिया में प्रयुक्त की जाने वाली अधिकांश हिंदी, हिंदी न होकर हिंगलिश या हिंग्लिशिया हो गई है तो ऐसा कहना गलत न होगा। मैं अपनी इस बात को प्रमाण के साथ कह रहा हूँ, व्हाट्सएप्प से एक उदाहरण देखिए :-

प्रिंट मीडिया ने विभिन्न आंदोलनों, क्रान्तियों में विशेष भूमिका अदा की है। हिंदी में पहला अखबार 'उदंत मार्तंड' सन् 1726 ई. में कलकत्ता (अब कोलकाता) से प्रकाशित हुआ। बात करें समकालीन प्रिंट मीडिया की भाषा पर तो उसके लिए यहाँ हिंदी के कई प्रमुख समाचार-पत्रों से कुछ उदाहरण लिए गए हैं। जो इस प्रकार हैं :

(1) ''जब भी ट्रेंड, स्टाइल और फैशन की बात होती है ... ऐसा ही एक फैशन शो हाल ही में राजीव बिल्ला ने आर्गनाइज़ किया। इस इवेंट में प्रोफेशनल मॉडल्स के साथ-साथ फ्रैशर्स को भी पार्टिसिपेट करने का मौका दिया गया। इस मौके पर राजीव ने शहर के कई सोशलाइट को इनवाइट किया।''

(2) ''जो लोग अपनी हेल्थ और फिटनेस को लेकर ज्यादा जागरूक है : उनके लिए ये एक अच्छा प्लेटफार्म साबित हो सकता है। यह एक तरह की फिटनेस कम्यूनिटी है ... यहाँ पर सर्टिफाइड कोच को हायर करने की सुविधा भी है।''

सोशल मीडिया और प्रिंट मीडिया (समाचार पत्र) में आज जिस हिंदी को धड़ल्ले से हिंग्लिशिया बनाकर और हिंदी में अंग्रेजी के शब्दों को प्रस्तुत करके समाज में परोसा जा रहा है, यह आज की हिंदी के लिए बहुत ही हानिकारक और विडम्बना पूर्ण स्थिति है, और न सिर्फ हिंदी के लिए बल्कि हिंदी के समाचार-पत्रों के लिए भी क्योंकि आज भी दूर गांव देहात में बहुत सारे लोग ऐसे मौजूद है जिनकी सुबह अखबार के बिना अधूरी होती है। समस्या उस वर्ग के लोगों के लिए है जिनको हिंदी के बीच में आए अंग्रेजी भाषा के शब्द उलझन में डाल देते हैं। हिंदी का एक प्रमुख अखबार कई बार ''नूराकुश्ती'' शब्द का प्रयोग करता है जिससे बहुत सारे लोग अपरिचित है। यदि समय पर ही हमने इस ओर ध्यान न दिया तो स्थिति और भयावह हो सकती है। अत: आधुनिक हिंदी कवि केदारनाथ सिंह के शब्दों में उनकी 'मातृभाषा' शीर्षक कविता को उद्धृत करते हुए अंत में केवल इतना ही कहूंगा कि यहाँ हिन्दी और समकालीन मीडिया की भाषा को समझने का प्रयासभर है, यह कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं है।

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष एवं डिजिटल डाटा के महारथी उमेश आर्य ने कहा कि पुराने पत्रकारों के पास पत्रकारिता की डिग्री नहीं होती थी, लेकिन जानकारी पूरी होती थी। आज पत्रकारों के पास पत्रकारिता की डिग्री तो है, लेकिन जानकारी नहीं होती है। यू-ट्यूब के कारण अब जानकारी हमारे पास ओवरलोड है, लेकिन हमें यह नहीं मालूम है कि इसमे से हमारी उपयोग की जानकारी कौन सी है और उसे हमें किस तरह से प्राप्त करना है।

भविष्य में हिंदी पोर्टल्स का विकास

हिंदी पोर्टल वेब दुनिया के एडिटर-एंटरटेनमेंट समय ताम्रकर ने कहा कि भारत में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के पोर्टल्स का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। हिंदी पढ़ने वालों की दर प्रतिवर्ष 94 प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ रही है जबकि अंग्रेजी में यह दर 19 प्रतिशत है। यही कारण है कि तेजी से नए पोर्टल्स सामने आ रहे हैं। अब पोर्टल के काम में कई बड़े खिलाड़ी आ गए हैं। इनके आने का भी कारण यही है कि आने वाला समय हिंदी पोर्टल का समय है। पोर्टल पर जो भी लिखा जाए वह सोच समझकर लिखना चाहिए क्योंकि अखबार में तो जो छपा है वह एक ही दिन दिखता है, लेकिन पोर्टल में कई सालों के बाद भी लिखी गई खबर स्क्रीन पर आ जाती है और प्रासंगिक बन जाती है।

हिंदी आज एक ऐसी भाषा है, जो दुनिया में इतने बड़े स्तर पर बोली व समझी जाती है। मीडिया ने हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दुनियाभर में आज भारतीय फिल्में व टेलीविजन कार्यक्रम देखे जाते हैं। इससे भी दुनिया में हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ है। सोशल मीडिया, इंटरनेट व मोबाइल के कारण आज युवा पीढ़ी इस भाषा का सबसे अधिक प्रयोग कर रही है। आज यह भाषा कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश को जोड़ने वाली भाषा है। हिंदी के विस्तार में मीडिया की अहम भूमिका है। हिंदी भाषा दुनियाभर में समझी बोली जाती है। यह इस भाषा की ताकत को बताता है। भाषा लोगों को जोड़ने का काम करती है और आपसी सौहार्द को बढ़ाती है। हिंदी पत्रकारिता में भाषायी चुनौतियाँ भी सामने रही हैं।

सोशल मीडिया का असर बस नकारात्मक ही नहीं है। ट्विटर जैसे मंचों की शब्द सीमा ने अपनी बात को चुस्त और कम से कम शब्दों में कहने के अभ्यास को संभव बनाया है। सोशल मीडिया ने सार्वजनिक अभिव्यक्ति और एक बड़े समुदाय तक निडर और बिना रोक-टोक तथा नियंत्रण के अपनी बात, अपनी सोच और अनुभव पहुंचाना संभव बनाकर करोड़ों लोगों को नई ताकत, छोटी-बड़ी बहसों में भागीदारी का नया स्वाद और हिम्मत दी है। इस नई ताकत ने सरकारों और शासकों को ज्यादाय पारदर्शी, संवादमुखी और जवाबदेह बनाया है, जनता के मन और नब्ज़ को जानने का नया माध्यम दिया है। सोशल मीडिया की ताकत ने सरकारों को अपने फैसले, नीतियों और व्यवहारों को बदलने पर भी मजबूद किया है, पर क्या इस मीडिया ने लोक-विमर्श को ज्यादा गंभीर, गहरा, व्यापक, उदार बनाया है ? आज से 60 वर्ष पूर्व 14 सितम्बर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि हिंदी दिवस पर होने वाले भव्य और खर्चीले आयोजनों तथा राजभाषा कानून लागू किए जाने के बावजूद हिंदी सचमुच केन्द्र की राजभाषा बन गई है, किंतु यह तथ्य आज सभी स्वीकार करते हैं कि हिंदी अब व्यावहारिक तौर पर इस देश की संपर्क भाषा बन चुकी है। एक समय था जब पढ़-लिखे होने का मतलब था अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना। इसलिए, आजादी के समय बड़े या तथाकथित राष्ट्रीय समाचार पत्र अंग्रेजी में ही छपते थे, किंतु शिक्षा और साक्षरता के प्रसार की दिशा में किए गए प्रयासों के फलस्वरूप यह अवधारणा बदलने लगी तथा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के अखबार पढ़ने वाले लोगों की संख्या में इजाफा होने लगा। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को सर्वस्वीकार्य बनाने में रेडियो की उल्लेखनीय भूमिका रही है। आकाशवाणी ने समाचार, विचार, शिक्षा, सामाजिक सरोकारों, संगीत, मनोरंजन आदि सभी स्तरों पर अपने प्रसारण के माध्यम सें हिंदी को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान किया। मनोरंजन के अलावा आकशवाणी के समाचार, खेल कार्यक्रम, प्रमुख खेल प्रतियोगिताओं का आंखों देखा हाल तथा किसानों, मजदूरों और बाल व महिला कार्यक्रमों ने हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाने में बहुत बड़ा योग दिया है और आज भी दे रहे हैं।

मीडिया का सबसे मुखर, प्रभावशाली और आकर्षक माध्यम टेलीविजन माना जाता है। टेलीविजन श्रव्य के साथ-साथ दृश्य भी दिखाता है इसलिए यह अधिक रोचक है। रेडियो की तरह टेलीविजन ने भी मनोरंजन कार्यक्रमों में फिल्मों का भरपूर उपयोग किया और फीचर फिल्मों, वृत्तचित्रों तथा फिल्मों गीतों के प्रसारण से हिंदी भाषा का देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के सिलसिले को आगे इन कार्यक्रमों में पुरस्कार के चयन में श्रोताओं द्वारा मतदान करने के नियम ने इनकी पहुंच को और विस्तृत कर दिया। टेलीविज़न चैलनों पर प्रसारित किए जा रहे तरह-तरह के लाइव शो में भाग लेने वाले लोगों को देखकर लगता ही नहीं कि हिंदी कुछ खास प्रदेशों की भाषा है। हिंदी फिल्मों की तरह टेलीविजन के हिंदी कार्यक्रमों ने भी भौगोलिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक सीमाएं तोड़ दी हैं।

हिंदी समाचार भी सबसे अधिक दर्शकों द्वारा देखे सुने जाते हैं। हालांकि, इन दिनों हिंदी समाचार चैनल, समाचारों के स्तरीय प्रसारण की बजाय अविश्वसनीय और सनसनीखेज खबरें प्रसारित करने के लिए आलोचना झेल रहे हैं, पर फिर भी टीआरपी के मामले में वे अंग्रेज़ी चैनलों से कहीं आगे हैं। इन आलोचनाओं के बावजूद हिंदी खबरिया चैनलों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। जून 2009 में 22 नये चैनलों को प्रसारण की अनुमति मिली, जिनमें से अधिकांश चैनल हिंदी के हैं और लगभग सभी ने खबरे प्रसारित करने की अनुमतति मांगी है। इस संदर्भ में यह जानना दिलचस्प होगा कि स्टार, सोनी और जी जैसे विदेशों से अपलिंक होने वाले चैनलों ने जब भारत में प्रसारण प्रारम्भ किया तो उनकी योजना अंग्रेजी कार्यक्रम प्रसारित करने की थी, किंतु बहुत जल्दी उन्होंने महसूस किया कि वे हिंदी कार्यक्रमों के जरिये ही इस देश में टिक सकते हैं और वे हिंदी चैनलों में परिवर्तित होते गए।

संदर्भ

1. श्रीमति इंदिरा गांधी का भाषण विश्व हिन्दी तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन (स्मारिका) पृ. 290
2. पत्रकारिता के मूल सिद्धांत : चन्दर्पत नवीन कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3. भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उनका वर्तमान स्तर : मधुबाला सक्सेना, हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़ 1990
4. रेडिया प्रसारण : कोशल शर्मा, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 204

ISBN: 978-81-954645-0-0

5. संचार और संचार माध्यम : चन्द्र प्रकाश मिश्र, संजय प्रकाशन दिल्ली, 2002
6. प्रो सिधेश्वर प्रसाद विश्व हिन्दी पृ. 202
7. सोमित्र मोहन, समकालीन कला, ललिता कला अकादमी की पत्रिका, नवम्बर 1986 मई 1987, संख्या ललित कला अकादमी प्रकाशन, रविंदर भवन नई दिल्ली।
8. डॉ. सत्यव्रत सिन्हा, नवरंग, अभिव्यक्ति प्रकाशन 847, यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद–2 प्रथम संस्करण, 1970
9. हरीश कुमार सिनेमा और साहित्य, संजय प्रकाशन, प्रगति विहार, सोम बाजार, दिल्ली संस्करण 2010
10. डॉ. राजमणि शर्मा, हिन्दी भाषा : इतिहास और स्वरूप, वाणी प्रकाशन, 21 ए दरियागंज, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2004

ISBN: 978-81-954645-0-0